Chapter 14

वैदिक काल

Kamlesh Nath, Department of History

Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

वेद

वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है एवं वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया एवं वेदों की रचना आर्यों ने की। आर्य का शाब्दिक अर्थ श्रेष्ठ एवं कुलीन होता है। वेदों को नित्य प्रामाणिक अपौरुषेय माना जाता है। वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते हैं एवं वैदिक मंत्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था।

वेद चार प्रकार के हैं

1 ऋग्वेद
2 यजुर्वेद
3 सामवेद
4 अथर्ववेद

1 ऋग्वेद

ऋग्वेद में 10 मंडल हैं 1028 सूक्त हैं 10580 मंत्र हैं या ऋचाएं हैं पहले एवं दसवां मंडल बाद में जोड़े गए हैं दूसरे से लेकर सातवें मंडल को वश मंडल या परिवार मंडल कहा जाता है तीसरे मंडल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की गायत्री मंत्र सावित्री; सूर्य को समर्पित है सातवें मंडल में दाशराज्ञ युद्ध का उल्लेख मिलता है भरत कबीला एवं दस कबीले के मध्य हुआ था यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लड़ा गया था। आठवें मंडल में गोशा सिकता अपाला विश्वरा काश्वर्ती लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं नौवें मंडल सोम को समर्पित है दसवें मंडल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख एवं चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है। दसवें मंडल के नासदिय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है

ऋग्वेद के मंत्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण होता कहलाता है एवं इसका उपवेद आयुर्वेद है।

2 यजुर्वेद

इसके दो भाग होते है कृष्ण यजुर्वेद एवं शुक्ल यजुर्वेद। यह वेद गद्य एवं पदया में लिखा गया है इसमें यज्ञ करने की विधियो का उल्लेख किया गया है। इस वेद में शून्य का उल्लेख मिलता है

मंत्र का उच्चारण करने वाला अधर्व्यु एवं इसका उपवेद धनुर्वेद है।

3 सामवेद

संगीत का प्राचीनतम स्रोत है वैदिक मंत्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं। भगवान कृष्ण का प्रिय वेद है। मंत्रों का उच्चारण करने वाला उदगाता एवं उपवेद गंधर्ववेद कहलाता है।

4 अथर्ववेद

इसे महीवेद भेषजया अथर्वअंगिरास वेद भी कहा जाता है यह भौतिकवादी वेद है इसमें जादू टोने टोटके का उल्लेख किया गया है इसमें चिकित्सा पद्धतियों का व औषधीय का उल्लेख किया गया है मत्रों का उच्चारण करने वाला ब्रह्म कहा जाता है एवं शिल्प वेद है।

- ✓ वेद ब्राह्मण आरण्यक एवं उपनिषद् ये वैदिक साहित्य है इसे श्रुति साहित्य भी कहा है।
- ✓ वेदांग स्मृति पुराण रामायण एवं महाभारत यह वैदिक साहित्य में नहीं है।

ब्राह्मण साहित्य

इसमें यज्ञ करने की विधियों का उल्लेख किया गया है।

आरण्यक साहित्य

इनकी रचना वनों; अरण्य में की गई। इसकी विषयवस्तु रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व है।

ISBN: 978-93-344-1269-7

उपनिषद्

इनकी संख्या 108 है इसे वेदांत भी कहा जाता है। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है। इसकी भी विषयवस्तु रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व हैं।

प्रमुख उपनिषद्

1 कठोपनिषद्

कठउपनिषद्दृइसमें यम एवं नचिकेता का संवाद है इसमें कर्मकांड की आलोचना की गई है।

2 छांदोग्य उपनिषद्

इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगिरस ऋषि का शिष्य बताया है।बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धांत इसमें मिलता है।

3 बृहदारण्य उपनिषद्

सबसे लंबा उपनिषद् इसमें गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है।

4 जाबाल उपनिषद्

चारों आश्रम का उल्लेख मिलता है

5 एतरेय उपनिषद्

बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग का उल्लेख मिलता है।

6 मुण्डकोपनिषदद्दृ

इसमें सत्यमेव जयते का उल्लेख मिलता है।

वेदांगद्दृ

वैदिक साहित्य को समझने हेतु इसकी रचना की गई इनकी संख्या छह है शिक्षा व्याकरण ज्योतिष छंद कल्प निरुक्त।

पुराणद्दृ

पुराण का शाब्दिक अर्थ प्राचीन आख्यान है पुराणों की संख्या अठारह है इनकी रचना लोमहर्ष एवं उग्रश्रवा ने की।

मत्स्यपुराण

यह प्राचीनतम पुराण है इसमें शुंग एवं सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है।

विष्णुपुराण

विष्णुपुराण से मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त होती है।

वायु पुराण

इससे गुप्तवंश की जानकारी प्राप्त होती है।

सर्वप्रथम पार्जिटर ने पुराणों के ऐतिहासिक महत्व को बताया।

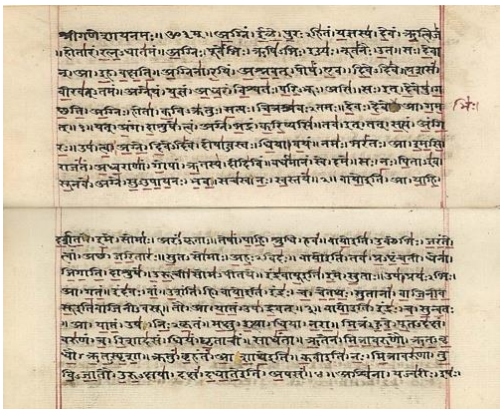

ISBN: 978-93-344-1269-7